International Journal for Multidisciplinary Research
Plagiarism & Intellectual Property Rights in Digital Age (PIPRDA-2023)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वर्तमान समय (डिजीटल युग) में हिन्दी माध्यम में शिक्षा की प्रासंगिकता

डॉ. पी.एन. फागना

हिन्दी विभाग, शासकीय नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय आगर–मालवा म.प्र.

भाषा किसी भी समाज में उसकी संस्कृति का अभिन्न अंग है। समाज में ज्ञान का पूर्ण प्रसार देने में भाषा सशक्त आधार होती है। सृजन में अनेक संस्थागत प्रयास हो रहे है। लेकिन फिर भी जो वास्तव में होना चाहिए,वह नहीं हो पा रहा है, क्योंकि ज्ञान के विर्मश का श्रेष्ठ आधार हमारी भाषा ही हो सकती है, भाषा सामाजिक सम्पत्ति है, वह केवल विचार अभिव्यक्ति का साधन नही है अपितु राष्ट्र विकास तथा आर्थिक विकास का उपकरण भी है, प्राचीन काल से ही स्वभाषा के महत्व को हमारें ऋषि, मुनियों व महान चिंतको ने भाषा के महत्व को बताया हैं। गोस्वामी तुलसीदास ने हिन्दी भाषा का नाम देते हुए लिखा है ''का भाषा का संस्कृत, प्रेम चाहिए सांच । काम जो आवे कामरी, का ले करी कुआँच''।। कबीर ने भाषा को बहते नीर के समान माना है। रीतिकालीन कवि केशवदास ने भी अपना काव्य सृजन ब्रजभाषा में किया है जो हिन्दी की ही एक बोली है। भाषा बोली न जानही, जिनके कुल के दास। तिन भाषा कविता करी, लघुमति केशवदास।। आधुनिककाल तक पहुँचकर यह निजभाषा या मातृभाषा बन गई, उन्होने हिन्दी भाषा के महत्व को बताते हुए लिखा–निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मुल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय को शूल।। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने बडे सुंदर रुप में हिन्दी का महत्व पेश किया है– भारतीय भाषाएं नदियाँ। और हिन्दी महानदी।। इस प्रकार अनेकानेक विद्वानों ने हिन्दी में शिक्षा की प्रासंगिकता पर अपने अपने विचार व्यक्त किये हैं, जैसे :– महात्मा गाँधी कहते है ''हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज का प्रश्न है''। बालकृष्ण शर्मा नवीन ने कहा है:–राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी ही जोड़ सकती है। भारतीय संविधान की अष्टम अनुसूची में सम्प्रति वाईस भारतीय भाषाओं को अपने अपने राज्य की राजभाषा के रुप में मान्यता प्राप्त है। सभी भारतीय भाषाओं में हिन्दी का स्थान सर्वोपरि है, क्योंकि हिन्दी समन्वयात्मक भाषा है, महान उदार सहिष्णुता की भाषा के रुप में हिन्दी गौरवान्वित है। वर्तमान समय में हिन्दी राष्ट्रभाषा, मातृभाषा व सम्पर्क भाषा की सीमा लांघकर विश्व भाषा बन चुकी है, यह विश्व के एक सौ पचास से अधिक देशो मे फेले लगभग दो से पांच करोड भारतीयों द्वारा बोली जाती है भारत के अलावा चालीस देशो मे छः सौ से अधिक विश्वविद्यालयों व विद्यालयों मे पढ़ाई जाती है, एक सर्वेक्षण के मुताबिक विश्व में दूसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। यह भारत और फिजी की राष्ट्रभाषा भी है। ब्रिटिश काल के दौरन बहुत से श्रमिकों को भारत से बाहर ले जाया गया था इसलिए अधिकांश देशों में हिन्दी में आज एक क्षेत्रिय भाषा के रूप मे विद्यमान है।

- ❖ आज हिन्दी इतने व्यापक स्तर पर आगे बढ़ चुकी है, कि हर क्षेत्र मे दिखाई देती है। आज के डिजीटल युग के बढ़ते उपयोग ने हिन्दी भाषा के भविष्य के सम्बन्ध मे नवीन मार्ग प्रशस्त किया है जहां अंग्रेजी भाषा की विषय वस्तु निर्माण की गति 19 फिसदी है वही हिन्दी के लिए यह गति 94 प्रतिशत है इसलिए हिन्दी को नवीन सूचना प्रौद्यौगिकी की आवश्यकताओं के अनुसार ढाला जाये तो भाषा के विकास मे बेहद उपयोगी सिद्ध हो सकता है इसके लिये शासकीय व गैर शासकीय संगठनो के स्तर पर तो प्रयास किए ही जाने चाहिए निजी स्तर पर भी लोगों को इसे खूब प्रोत्साहित किया जाना चाहिए ।
- ➢ हिन्दी मे सबसे पहले डॉ. मनीश्वर गुप्त द्वारा एम.डी. का शोध प्रबंध 1987 मे प्रस्तुत किया गया था।
- ➢ इलाहाबाद हाईकोर्ट द्वारा न्यायमूर्ती प्रेमशंकर गुप्त द्वारा हिन्दी मे फेसला सुनाया गया।
- ➢ अंग्रेजी के विद्ववान जे.आर. कारपेंटर ने ''थियोलाजी ऑफ तुलसीदास'' लंदन विश्वविद्यालय में पहली बार शोध किया।
- ➢ हिन्दी मे संगीत ग्रंथ मानकुतुहल राजा मानसिंह तोमर ने किया।

विज्ञान मानता है, दिमाग के दोनो हिस्से सक्रिय रखती है हिन्दी ,होमी भाभा विज्ञान केन्द्र ने अपनी वेबसाईट EHINDI.HBCSE.TIFR पर विज्ञान की हर शाखा में अच्छी हिन्दी की किताबें उपलबद्ध है। 2003 से पहले हिन्दी मे कोई ब्लाग नही था। आज 50000 से ज्यादा हिन्दी ब्लाग ऐसे हैं जो रोज अपडेट होते हैं।

2009 मे गुगल सर्च मे शुरू हुई खोज की सुविधा तथा 2011 मे शुरू हुई हिन्दी में वेब एड्रेस बनाने की सुविधा, आज मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है, कि म.प्र. सरकार द्वारा नवम्बर 2022 से मेडिकल की पढ़ाई भी हिन्दी भाषा में कराने की सुविधा प्रदान की जिसका परिणाम स्पष्ट दिखता है कि अब ग्रामिण क्षेत्रों में भी मेडिकल की सुविधा आम जन तक पहुंचाई जा सकेगी।

हिन्दी को आज के दौर की जरूरतों के हिसाब से अनुकूल बनाया जा रहा है ताकि वह प्रगति की राह मे कही पिछड़ न जाये। कम्प्युटर एवं इंटरनेट युग के आगमन के साथ वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग सहित अनेक संस्थानों ने उपयोगी शब्दो का निर्माण किया है। यह हमेशा से चर्चा का विषय रहा है कि शब्द निर्माण की प्रक्रिया ऐसी हो की उन शब्दो का अधिकाधिक सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हो सके। नव–गठित शब्द सरल और सुबोध होना चाहिए। जरूरत पड़ने पर समाज में प्रचलित एवं स्वीकृत अंग्रेजी एवं अन्य भाषाओं के शब्दो को यथावत ग्रहण भी किया गया है इसी क्रम मे आज हिन्दी पठन–पाठन के क्षेत्र में भी कम्प्युटर, इन्टरनेट, सोशल मिडीया ,ब्लागिंग ,पोस्टर ,ई–मेल इत्यादि लोकप्रिय शब्दों का सहज प्रयोग बिना किसी भाषाई परिवर्तन के कर रहे है। इससे हिन्दी भाषा की ग्रहणशीलता और समन्वय प्रकृति और अधिक पुष्ट हुई है। भाषा का मूल स्वभाव ही जटिलता से सरलता की और बढ़ना है ।

निःसंदेह वर्तमान तकनीकी परिवेश में कम्प्युटर एवं इन्टरनेट में हिन्दी भाषा एवं देवनागरी लिपी के माध्यम से अनेक कार्य सम्पन्न किये जा रहे है।

देश के माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा 75 वे स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से दिए गए अभीष्ट विकास मंत्र :–सबका साथ ,सबका विकास और सबका प्रयास के क्रियान्वयक में हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। भूमण्डीलीकरण, बाजारवाद, सुचना प्रौद्यौगिकी इत्यादि ऐसे आयाम है जिनके प्रभाव से हिन्दी की उपयोगिता बढ़ी है, इसे विश्व स्तरीय बनाने की दिशा मे अनेक संगठन,आयोग एवं समूह दिन रात भगीरथ प्रयास कर रहे हैं।

देवनागरी लिपी के अनुरूप कोड बनाने का कार्य आई.आई.टी कानपुर में 1983 में शुरू हुआ भारत में पहला व्यक्तिगत हिन्दी कम्प्युटर 15 दिसम्बर 1997 को अस्तित्व में आया इसकी हिन्दी प्रणाली एवं डाटा विकास में कार्य आई.बी.एम. ने किया।

वर्तमान शिक्षा पद्धति में हिन्दी की प्रासंगिकता इसलिए भी अधिक मजबूत दिखाई देती है कि हिन्दी के अनेक शब्द तैयार है जिसका भरपूर उपयोग समाज में हो रहा है चाहे कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी क्यो न हो, हिन्दी भाषा में होने के कारण आसानी से सीख लेता है।

जैसे पी.सी. डॉस, बैंक मित्र, लीप, ऑफिस मैट आदि ऐसे समूह हैं जो भाषा की शुद्धता का ध्यान रखते हुए कार्य करते हैं।

हिन्दी ने सोशल मिडीया के विभिन्न रूपों जैसे फेसबूक, व्हाट्सऐप, यू–ट्युब, इंस्टाग्राम इत्यादि में अपना परचम लहराया हैं आज अंग्रेजी की तुलना में हिन्दी में लिखी गई पोस्ट या टिप्पणियां प्रयोगकर्ता को ज्यादा आकर्षित करती हैं। सोशल मिडीया पर हिन्दी के वर्चस्व का मुख्य कारण यह है कि हिन्दी भाषा अभिव्यक्ति का सरस,सहज सशक्त एवं वैज्ञानिक माध्यम है हिन्दी में लिखी गई बातों एवं भावों को समझने मे आसानी होती है सोशल मिडीया पर हिन्दी का ग्राफ दिनों–दिन आसमान छू रहा है।हिन्दी भाषा को इस प्रगति ने केन्द्र एवं राज्य सरकारो को अपने फैसले, नितीयों एवं प्रचलन में लाने की और ध्यान आकर्षित करवाया हैं।

अतः कहा जा सकता है कि हिन्दी को सिखना आज विश्व की अनिवार्यता हो गई है,हिन्दी भाषा नये शब्दो को गढ़ने का सामर्थ रखती है हिन्दी का संबंध विश्व की कई भाषाओं से होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में भी इसकी प्रासंगिकता स्वयं सिद्ध है एवं मातृभाषा या राष्ट्रभाषा में शिक्षा देने में निहीत हैं।

1. हिन्दी दिवस पर प्रसारित समाचार पत्र पत्रिकाएं ।
2. कार्यालयीन हिन्दी एवं भाषा कम्प्युटिंग–हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
3. हिन्दी साहित्य का इतिहास–आचार्य रामचन्द्र शक्ल–अशोक प्रकाशन नई सड़क नई दिल्ली।